दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

टेस्ट–6

(द्वितीय प्रश्न-पत्र)

DTVF / OPT-23 **HL-2306**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक : 250 *Maximum Marks* : 250

नाम (Name): Sandeep Kumar Meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 27/6/23

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

6	3	1	2	8	1	9

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) दिनकर की कविता 'उर्वशी' का प्रतिपाद्य

राष्ट्रकवि दिनकर ने अपनी रचनाओं के माध्यम से जनजागरण के काव्य का प्रतिपाद्य किया है। लेकिन उर्वशी में काम आध्यात्मक का विवेचन किया है।

उर्वशी के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार भी मिला।

उर्वशी प्रतिपाद्य :-

① इस रचना के माध्यम से काम आध्यात्म की प्रस्तुति करते हैं।

② यह रचना दिनकर की अन्य कविताओं के विपरीत शृंगार रस पर आधारित है।

③ दिनकर की रचना उर्वशी मनोविश्लेषणवादी रचना है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(4) दिनकर यहाँ विभिन्न आवेगों, मनोभावों को बताते है।

समग्रतः दिनकर के रचना संसार में विविधता का संचार करने में उर्वशी का योगदान महत्वपूर्ण है।

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) इप्टा का परिचय और महत्त्व

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'इप्टा' इंडियन पीपुल्स थियेटर है। इसके माध्यम से नाट्य मंचन को लोकप्रिय बनाया।

इप्टा के माध्यम से नाट्य विधा को लोक रंगमंच आदि के निकट लाने का प्रयास किया है।

इप्टा का महत्व :

(1) इसने नाट्य विधा को लोकप्रिय बनाने में योगदान दिया।

(2) इप्टा ने पारसी रंगमंच से दृश्यों का प्रभाव ग्रहण किया है।

(3) यह लोक रंजन के महत्व को स्पष्ट करती है।

(4) इप्टा ~~की~~ का प्रभाव नाट्य कलाओं के मंचन, रंग, पर्दों पर पड़ा है।

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अतः ~~भारत~~ हिन्दी के ~~नाटक~~ नाटक के विकास में इप्टा का महत्वपूर्ण योगदान है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) संस्मरण 'स्मृति की रेखाएँ'

संस्मरण स्मृति के आधार पर रचना करने से संबंधित है।

संस्मरण स्मृति की रेखाएँ :-

1. इसमें स्मृति के आधार पर रचना करते हैं।
2. संस्मरण में व्यक्ति का चित्र, पात्र, ~~व~~ एवं अन्य विवरण संस्मरणात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है।
3. संस्मरणात्मक विधा ~~का~~ लेखक के स्मृति, अनुभव आदि पर आधारित होती है।

अतः संस्मरण विधा स्मृति की रेखाओं पर आधारित होती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) संस्मरणकार कांतिकुमार जैन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) अज्ञेय की कहानियों का शिल्प

अज्ञेय ने अपनी कहानियों के माध्यम से मनोविश्लेषणवादी परंपरा का निर्वहन किया है।

अज्ञेय की कहानियों का शिल्प :

1. अज्ञेय ने संस्कृत निष्ठ शब्दावली का प्रयोग किया है।
2. अज्ञेय की कहानियाँ आंतरिक विश्लेषण अधिक है।
3. अज्ञेय कहानी गद्य में भी लयात्मक है।
4. अज्ञेय ने इलियट, फ्रायड से प्रभाव ग्रहण किया है।
5. ~~अज्ञेय~~

समग्रत: हम कह सकते हैं कि अज्ञेय की कहानियों का शिल्प आंतरिक मनोविश्लेषणवादी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

प्रभावों को ~~महत्व~~ प्रदर्शित करना ~~महत्वपू~~ में महत्वपूर्ण है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) क्या भक्तिकाव्य को लोकजागरण का काव्य कहना उचित है? सुचिंतित विचार प्रस्तुत कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भक्तिकाव्य लोक के चिंतन, पथ प्रदर्शक की भूमिका में है। भक्ति के माध्यम से संपूर्ण समाज की अभिव्यक्ति की गई है।

भक्ति काव्य को लोकजागरण का काव्य कहना उचित है क्योंकि:-

(1) समाज की समस्या को उठाता है। कबीर दास जी कहते हैं—

" दुखिया दास कबीर है जागे अरु रोवै,
सुखिया सब संसार ... ।"

(2) जाति प्रथा की समस्या को उठाता है।

" जाति पाति पूछो न साधु की
पूछ लीजियो ज्ञान - कबीर

(3) समाज में समन्वयात्मक दृष्टिकोण विकसित करता है—

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

" शिवद्रोहि मम दास कहावा।"

(4) कर्म प्रधान विश्व की के निर्माण की बात करता है -

"कर्म प्रधान विश्व करि राखा।"

(5) बेरोजगारी की समस्या को उठाता है।

" बणिक बणिक न चाकर को चाकरी।"
जीविका विहीन लोग हैं सीद्यमान सोच बस।"

(6) प्रेम को मूल्य के रूप में स्थापित करता है। जायसी एवं कबीर प्रेम की प्राप्ति में सर्वस्व अर्पण की बात करते हैं -

" मानुस प्रेम भएउ बैकुंठी नाहीं तो
काह छार एक मूंठी।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(7) भाषा के स्तर पर लोक की भाषा को माध्यम बनाते हैं। तुलसी दास अवधी, कबीर के यहाँ सधुक्कड़ी भाषा है -

" संस्कृत है कूप जल
भाखा बहता नीर।"

(8) जायसी के यहाँ नागमती का विरह भी सामान्य नारी का विरह है। यह विरह जायसी को हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ कवियों में शामिल करता है।

" सासु ननद बोलिहिं जिर लेहूँ...।"

(9) प्रकृति भी काव्य में शामिल होती है। मानवीय संवेदनाओं के साथ है।

" फिर-फिर रोउ कोउ नाहिं डोला
आधी रात विहंगम बोला।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

समग्रत: हम कह सकते हैं कि भक्तिकाव्य लोक के साथ है, लोक का चिंतन है और समन्वयात्मक चिंतन की स्थापना करता है।

भक्तिकाव्य में समय की सीमाओं को लांघकर मानवीय मूल्यों की स्थापना की है और सबके मंगल की कामना करता हुआ कहता है-

" ~~परपीड़ा~~ परहित सरिस धर्म नहिं भाई
परपीड़ा सम नहिं अधमाई।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) पृथ्वीराजरासो के महाकाव्यत्व पर विचार कीजिये। 15

पृथ्वीराज रासो चंदरबरदाई का चरित्र प्रधान महाकाव्य है। यह दरबारी काव्य है पृथ्वीराज की प्रशंसा में लिखा गया है।

पृथ्वीराज रासो का महाकाव्यत्व :-

(1) पृथ्वीराज रासो पुराने मानदंडों के अनुसार 69 सर्गों में विभक्त है। ~~यह~~

लेकिन आधुनिक मानदंडों पर कुछ कमजोर नजर आता है :-

(1) उदात्त नायक :- पृथ्वीराज अंत में मर जाता है। दूसरा वह छोटी-छोटी बातों पर अपने मंत्रियों को मार देता है। लेकिन उस समय अनुसार अंत में चंदरबरदाई व पृथ्वीराज कटार घोंप कर एक-दूसरे को मारते हैं। यह राजपूत इतिहास में मांगी हुई मौत ~~थी~~ है-

" बारह बरस लौं कूकर जिये, बरस अठारह क्षत्रिय जिये.... ।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(2) उदात्त कथानक :- पृथ्वीराज रासो का कथानक भी उदात है, इसमें पृथ्वीराज की वीरता का वर्णन है। कथानक में बिखराव भी नहीं है। पृथ्वीराज रासो मोहम्मद गौरी को भारतीय परंपरा के अनुसार माफ भी करता है। अंत में मोहम्मद गोरी को मारता भी है।

"चार बांस चौबीस गज अंगुल अष्ट प्रमाण।
ऐते पै सुल्तान है मत चूकै चौहान।"

(3) उदात्त रस :- रचना को पढ़ने पर वीर रस की प्राप्ति होती है। यह भी औदात्य का प्रभाव देता है।

(4) उदात्त शिल्प :- रचना राजस्थानी भाषा में है, भाषा में बिंब, अलंकार का प्रयोग बेहतर है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

महाकाव्यात्मक कुछ कमियाँ भी हैं :-

(1) उदात्त नायक का प्रभाव रामचरितमानस जैसा नहीं है।

महाकाव्यत्व रामचरित मानस के तुलना करने पर कम नजर आता है।

समग्रतः हम कह सकते हैं कि हिन्दी साहित्य का पहला महाकाव्य पृथ्वीराज रासो आधुनिक अर्थों में जरूर कुछ कमजोर है। लेकिन पुराने मानदंडों के अनुसार महाकाव्यत्व की कसौटी पर पूर्ण नजर आता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी साहित्येतिहास-लेखन परंपरा में 'शिवसिंह सरोज' की सीमाओं एवं महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दु साहित्य - इतिहास लेखन परंपरा में शुक्ल पूर्व इतिहास लेखन में शिव-सिंह सरोज का महत्वपूर्ण योगदान है।

शिवसिंह सरोज की सीमा :-

1. इन्होने काल विभाजन नहीं किया था।
2. रचनाकारों के वर्णन में अस्पष्टता मिलती है।

महत्व :-

1. आदिकालीन कवियों का रचना के साथ वर्णन।
2. रीतिकाल में ~~घनान्द~~ घनानन्द को महत्व दिया।

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3. रीतिकाल की रचनाओं में बिहारी के महत्व को उजागर किया।
4. श्रृंगार वर्णन को अधिक महत्व दिया।
5. प्रबंध रचनाओं को बेहतर बताया।

अत: शिवसिंह सरोज के लेखकों वर्णन, रीतिकाल का वर्णन बेहतर प्रतीत होता है ~~इसमें~~ इसने बाद के इतिहास लेखन को दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) हिंदी के 'समस्या नाटक' पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी सूफीकाव्य परंपरा में 'मधुमालती' के वैशिष्ट्य का निरूपण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) दिनकर की काव्यकृति 'रश्मिरथी' के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) समकालीन हिंदी उपन्यास में 'स्त्री-विमर्श' की उपस्थिति की पहचान कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) नई कहानी की सीमाएँ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नई कहानी के प्रस्तावकों में मोहन राकेश, कमलेश्वर एवं राजेन्द्र यादव हैं। नई कहानी आंदोलन की प्रथम कहानी निर्मल वर्मा की परिन्दे है।

नई कहानी आंदोलन की सीमा :-

(1) नई कहानी आंदोलन ग्रामीण समाज को शामिल नहीं करता है। इसके केन्द्र में शहरी मध्य वर्ग है।

(2) भोगा हुआ यथार्थ के स्थान पर, सोचा हुआ यथार्थ लिखते हैं।

(3) कहानी यौन कुंठाओं तक सीमित हो गई।

(4) कहानी में शिल्प के स्तर पर भी कमियाँ नजर आती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(5) पाँच -छः कहानी पढ़ने के बाद एक जैसे कथानक लगने लगते है।

हालांकि नई कहानी आंदोलन ने 1960 के बाद के शहरी समाज में निम्न मध्य वर्ग की पीडाओं, लघु मानववाद, अस्तित्ववाद को बेहतर निरूपित किया है।

समग्रतः : नई कहानी अपनी कुछ सीमाओं के साथ है लेकिन यह हिन्दी कहानी को दिशा देने का काम करती है। हिन्दी कहानी परंपरा को आगे बढ़ाती है। ~~सब~~ प्रेमचंद की कहानी जहाँ शहरी समाज की पीडा को नहीं अभिव्यक्त करती वहीं यह कहानी शहरी समाज को शामिल करके ~~संपूर्ण~~ कहानी की परंपरा को संपूर्णता प्रदान करती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) दिनकर की कविता में ओज

दिनकर की कविता में ओजीय गुण पाया जाता है। दिनकर स्वयं मंचीय कविता करते थे। ~~इसलिए~~

दिनकर कविता में ओज गुण :

1. कविताओं में आजाद भारत में भूख की विभीषिका को बताते हैं:—

"श्वानों का मिलता दूध-भात
भूखे बच्चे अकुलाते हैं,
माँ की छाती से चिपक-चिपक
जाड़े की रात बिताते हैं।

2. युद्ध के औचित्य को न्याय के लिए हो और समाज हित में उचित मानते है—

"चुराता न्याय .... रण को बुलाता वही है।

3. चीन युद्ध के बाद हुंकार कविता

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

में शंकर के प्रलय नृत्य का आह्वान करते हैं:-

" आज फिर....
घर्घर - घर्घर नाद...।"

" रे रोक युधिष्ठिर कौन यहाँ जाते दो उनको स्वर्ग धीर....
× × ×
लौटा दे अर्जुन भीम वीर।"

(4) कर्म, जीवन एवं इहलौकिकवाद के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहते हैं:-

" ऊपर सब कुछ शून्य - शून्य है
× × ×
धर्मराज जो कुछ है जीवन में मिट्टी में।

अतः दिनकर का रचना संसार रश्मिरथी, हुंकार, कुरुक्षेत्र एवं उर्वशी आदि रचनाओं से मिलकर बना है जिसमें प्रेम, ओज आदि रंग देखने को मिलते हैं इन सब में ओज गुण प्रधान है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'परख' उपन्यास की 'कट्टो'

जैनेन्द्र के उपन्यासों में महिला पात्र अधिक सशक्त हैं। परख उपन्यास में कट्टो का व्यक्तित्व देखने को मिलता है

कट्टो :-

(1) कट्टो पहले सत्यधन से प्यार करती है लेकिन सत्यधन किसी दूसरी महिला से शादी करता है।
(2) कट्टो इस बात से बुरा नहीं मानती है।
(3) कट्टो बिहारी से शादी करती है। बिहारी को सत्यधन के बराबर स्थान देती है।
(4) कट्टो आध्यात्मिक प्रेम की तरफ मुड़ जाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(5) कहीं और बिहारी प्रसन्न रहते हैं।

(6) कहीं निर्णय निर्माण अधिक सक्षम है।

समग्रतः जैनेन्द्र की महिला पात्र अधिक सशक्त, रचनात्मक है। जैनेन्द्र के यहाँ प्रेम, शिल्प के स्तर पर भी विशिष्टता देखने को मिलती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) विद्यापति की सौंदर्य-चेतना

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विद्यापति आदिकाल के कवि है ~~जहाँ~~ इनकी रचनाओं में समाजिक चिंतन देखने को मिलता है।

विद्यापति की सौंदर्य चेतना :

(1) ~~सखी~~ राधा सखी के रूप में वर्णन किया है। इसमें राधा कहती है-

" जनम अवधी भर
रूप निहारत भेल।"

(2) सा० राधा के सौंदर्य का वर्णन करते हुए विद्यापत कहते हैं—

"किनल कन्हाई कोन्चन आँखें।"

(3) शरारिक सौंदर्य का वर्णन है—

"सखिया पूछती अनुभव . . . ।"

(4) विद्यापत का काव्य चिंतन सौंदर्य वर्णन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

~~4~~ की छवि से बेहतर है।

समग्रतः हम कह सकते हैं कि विद्यापति का सौंदर्य वर्णन लौकिक, शारीरिक जैसे मनोभावों के साथ में संपूर्णता को धारण करता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) हिंदी रंगमंच की विकास-यात्रा में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय का योगदान।

हिन्दी रंगमंच ने जनजागरण ~~का~~ के माध्यम के रूप में महत्वपूर्ण रूप से काम किया।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय का योगदान :-

1. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय ने प्रशिक्षण के स्तर पर बेहतर काम किया।
2. कलाकारों को एक औपचारिक प्लेटफॉर्म प्रदान किया।
3. रंगमंच विधा को अधिक शोध एवं विषय वैविध्य मिला है।
4. रंगमंच विधा को अधिक समावेशी।
5. इसने दूरदर्शन के माध्यम से प्रेमचंद्र के उपन्यासों, कहानियों

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

एवं अन्य उपन्यासकारों की रचनाओं का मंचन किया।

समग्रत: राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय वर्तमान समय में भी फिल्म, टी.वी. एवं अन्य मंचों के लिए बेहतर कलाकार प्रदान कर रहा है। इसने मंचन, नाट्य विधा, आदि दर्शनीय विधाओं को समृद्धता प्रदान की।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'समानान्तर' कहानी-आन्दोलन का परिचय देते हुए हिन्दी कहानी को उसका अवदान बताइए। 20

/

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) हिंदी साहित्येतिहास-लेखन में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की सीमाओं का विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्येतिहास लेखन में रामचन्द्र शुक्ल का स्थान केन्द्र में है बाद के इतिहास लेखकों ने रामचंद्र शुक्ल की परंपरा का ही खंडन-मंडन किया है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल की इतिहास लेखन की सीमा :

(1) आदिकाल का नामकरण :- शुक्ल जी ने आदिकाल का नामकरण वीर काव्य और रासो काव्य को आधार बनाकर किया। इससे आदिकाल का बौद्ध, जैन एवं सिद्धों नाथों का साहित्य बाहर हो गया। बाद में हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इसे शामिल किया।

(2) कबीर का मूल्यांकन :- शुक्ल जी ने कबीर के मूल्यांकन में भी भाषा, रचना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आदि के स्तर पर कमियाँ नजर आती है।

(3) भक्तिकाल का उदय :- शुक्ल जी ने कहा हताश जाति के पास भक्ति के अलावा विकल्प नहीं था। यह भक्ति काल की उस परंपरा को नकारता है जो दक्षिण से शुरू होकर उत्तर में आई थी।

(4) रीतिकाल के प्रारंभ :- शुक्ल जी ने रीतिकाल का प्रारंभ चिंतामणी से माना जबकि बाद के रचनाकारों केशवदास से माना।

(5) समकालीन साहित्य का मूल्यांकन :-
शुक्ल जी छायावाद को रहस्यवादी साहित्य कहते हैं। छायावाद की भाषा,

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

शिल्प आदि के स्तरों पर भी महत्व नहीं देते हैं।

(6) गद्य साहित्य को महत्व नहीं देना :-
शुक्ल जी साहित्य इतिहास लेखन में गद्य साहित्य को महत्व नहीं देते हैं। इससे भारतेन्दु, प्रेमचन्द की रचनाएं बाहर हो जाती है।

शुक्ल जी ने साहित्येतिहास लेखन में प्रबंध काव्य, परंपरा आदि मानदंडों को महत्व देने के कारण सीमाएँ नजर आती है समाज की चित्तवृत्तियों के प्रतिबिंब के रूप में साहित्येतिहास लेखन का प्रयास सर्वप्रथम शुक्ल जी के यहीं देखने को मिलता है।

समग्रत: हम कह सकते हैं कि शुक्ल जी एवं हजारी प्रसाद द्विवेदी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

के साहित्य इतिहास लेखन को एक साथ देखने पर संपूर्णता नजर आती है। बाद के आलोचकों ने शुक्ल जी की कमियों को दूर करने का प्रयास ही किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'आधे-अधूरे' नाटक की संवेदना पर प्रकाश डालिये। 15

मोहन राकेश के नाटक अस्तित्ववाद, लघुमानवाद एवं अनिर्णयता को केन्द्र में रखकर रचना को संपूर्ण बनाते हैं।

आधे - अधूरे नाटक की संवेदना :

1. आधे - अधूरे नाटक की मुख्य पात्र सावित्री पति -पत्नी के संबंधों के अलावा भी संबंध बनाती है और कहती है -

"मुझे कपड़े बदलने से आसान पुरुष बदलने में ~~लगता~~ लगता है।

2. महेंद्रनाथ भी अन्य स्त्रियों के साथ संपर्क में है।

3. महेन्द्रनाथ व सावित्री अंत में एक -साथ रहने को न चाहते हुए भी मजबूर हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(4) मोहन राकेश इस नाटक में संपूर्ण अस्तित्ववादी धारणा को अभिव्यक्त करता है।

(5) मोहन राकेश के नाटक आधे-अधूरे में सावित्री अधिक सशक्त पात्र के रूप में सामने आती है। ऐसा पाठक को परिस्थितियों के कारण महसूस होता है।

(6) मोहन राकेश के सभी नाटकों में महिला पात्र अधिक सशक्त एवं निर्णयात्मक स्थिति में होते हैं। आषाढ़ के एक दिन में मल्लिका।

समग्रतः आधे-अधूरे नाटक में मोहन राकेश अस्तित्ववाद, परिस्थितियों का महत्व एवं लघुमानव की अवधारणा को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्पष्ट करते हैं। मोहन राकेश अपने नाटकों में व्यक्ति में नायकत्व एवं खलनायकत्व को संप्रेषण करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी की आंचलिक उपन्यासधारा पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेमचंदोत्तर उपन्यास लेखन की धारा में आंचलिक उपन्यास की परंपरा शुरु होती है। यहाँ अंचल ही नायक के रूप में पेश आता है।

उदा. शिवपूजन सहाय – देहाती दुनिया
नागार्जुन – ~~बलचनमा~~ बलचनामा
रेणु – मैला आंचल

आंचलिक उपन्यास की संवेदना :-

① आंचलिक उपन्यास अंचल की संपूर्ण विशेषताओं को बताती है। मैला आंचल की भूमिका में रेणु कहते हैं –

" इसमें फूल भी है, शूल भी है . . . ।"

② ग्रामीण समाज के चिंतन को केन्द्र में रखती है। यह ग्रामीण शोषण, किसान,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राजनीतिक दलों आदि की मनोवृति को स्पष्टता के साथ बताती है। ~~अलीदास दफा 40~~ कालीचरण समाजवादी होते हुए भी अपने लाभ के रूप में देखता है।

उदा. – दफा 40

③ शोषण में पीड़ित एवं सुभेद्य वर्ग अधिक प्रभावित होते हैं।

" बूढ़ी, जवान . . . छोड़ना नहीं।"

शिल्प के स्तर पर आंचलिक उपन्यास :-

① भाषा :- भाषा ग्रामीण अंचल की मिठास को धारण करती है। यह अंग्रेजी शब्दों का भी आंचलीकरण करती है –

" भैंस-चरमन – vice chairman

② भाषा पशु-पक्षी की भी है –

" कुत्तों का भौंकना।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(3) लोक गीतों का प्रयोग

उदा. मैला आंचल में जाट जाटिन एवं विद्यापत के गान।

(4) धार्मिक ग्रंथों के उदाहरण भी आंचलिकता के साथ आते हैं–

"हानि लाभ जीवन मरण - - -।"

(8)

समग्रत: आंचलिक उपन्यास शिल्प के स्तर पर विशिष्ट होते हैं। इनमें लोक संस्कृति, लोक भाषा, लोक गीतें आदि का प्रयोग होता है। संवेदना एवं शिल्प का यह दृष्टिकोण ही आंचलिक उपन्यास की मिठास को अन्य उपन्यास धारा से अलग करता है। आंचलिक उपन्यास के मानदण्ड मैला आंचल सर्वश्रेष्ठता धारण करके तय करता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) 'अंधेर नगरी' नाटक की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिये। 20

नवजागरण के प्रतिनिधि रचनाकार भारतेंदु ने अंधेरी नाटक जन जागरण के माध्यम के रूप में लिखा था। यह नाटक वर्तमान समय में भी उतना ही प्रासंगिकता धारण करता है।

अंधेरी नाटक की प्रासंगिकता :

(1) भ्रष्टाचार की समस्या को उठाता है यह समस्या में और भी गहरी हो गई है। भारतेन्दु कहते हैं–

"चना हाकिम जो सब - - -।"

(2) जातिवाद की समस्या वर्तमान में जातियों को लड़ाने के ~~काम आ रही~~ साथ और गहरी हो रही है। अंधेरी नगरी की कुंजरिन कहती है—

"लो हिंदुस्तान का मेवा फूट ~~और~~ और बैर।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(3) मध्यवर्ग वर्तमान समय में भी अनिर्णय की स्थिति में है। यह समस्या प्रेमचन्द के ओंकारनाथ एवं दत्ता बाबू (महाभोज) में गहरी होती है। दिनकर कहते है –

"जो तटस्थ हैं समय लिखेगा उनका अपराध।"

(4) अंधेर नगरी नाटक मंचीयता के दृष्टिकोण पर भी श्रेष्ठ है। इसके माध्यम से तत्कालीन समाज की बुराइयों को दिखाया गया है।

समग्रत: अंधेर नगरी नाटक वर्तमान समय में भी भारतेन्दु के समय के बराबर प्रासंगिक है। यह नाटक समाज, सरकार आदि की समस्याओं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को उठाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'जनवादी कहानी' का परिचय दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

जनवादी कहानी प्रेमचंद की कहानी परंपरा को ही आगे बढ़ाती है। जनवादी कहानी नई कहानी आंदोलन के समानान्तर ही नजर आती है।

जनवादी कहानी की विशेषता :

① जनवादी कहानी मार्क्सवाद एवं समाजवाद की विचारधारा से प्रेरणा प्राप्त करती है। इस कहानी धारा में ग्रामीण समाज केन्द्र में है।

② जहाँ नई दुनिया शिल्प के स्तर पर नये प्रयोग करती है वही जनवादी कहानी सीधे-साधे शिल्प के माध्यम से अपनी बात को कहने का प्रयास करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(3) जनवादी कहानी के केन्द्र में यौन कुंठाओं के स्थान पर ग्रामीण समाज की समस्या है। इसमें किसानों का शोषण, महिला समस्या आदि।

(4) यह आंदोलन आजादी के बाद मोहभंग की समस्या की अभिव्यक्ति करता है। नागार्जुन भी कहते हैं–

"कागज की आजादी मिलती
ले-लो दो-दो आने में।

(5) लोकतंत्र के स्वरूप परिवर्तन को बताती है।

समग्रत: जनवादी कहानी प्रेमचंद की परंपरा को आगे बढ़ाती है। इसके माध्यम से समाज की समस्या, ग्रामीण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समाज ~~जन~~ मूल विषय के रूप में देखने को मिलता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) महादेवी वर्मा की वेदनानुभूति पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

महादेवी वर्मा छायावाद के प्रमुख ~~स्तंभाकार~~ स्तंभकारों में से एक है। महादेवी के यहाँ वेदना अधिक देखने को मिलती है।

महादेवी वर्मा के रचनाओं में वेदना अधिक होने के कारण :-

1. रहस्यात्मक अभिव्यक्ति - इसमें रचना अव्यक्त सत्ता के प्रति प्रेम प्रकट करता है।
2. महिला होने के कारण।

महादेवी वर्मा की वेदनानुभूति :-

1. प्रेम जैसे विषय में :- महादेवी वर्मा प्रेम जैसे विषय में वेदना के माध्यम से अभिव्यक्ति करती है -

"मिलन का मत नाम लो
मैं विरह में चीर हूँ।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

2. रहस्यात्मक विषयों में वेदना के माध्यम से अभिव्यक्ति करती है।
3. कथ्य को कहने के लिए वेदना का प्रयोग।

समग्रत: महादेवी का रचना संसार वेदना, रुदन एवं अकेलेपन से भरा हुआ है -

"मैं नीर भरी दुख की बदली।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Feedback

Questions ....

Model Answer & Answer Structure ....

Evaluation ....

Staff ....

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

रफ कार्य के लिये स्थान

(Space for Rough Work)

Copyright – Drishti The Vision Foundation